भारत की पहली फीचर फिल्म राजा हरिश्चंद्र रिलीज हुई

1913 में आज ही भारत की पहली फीचर फिल्म राजा हरिश्चंद्र रिलीज हुई थी। यह एक मूक फिल्म थी। इसके निर्माता और निर्देशक दादा साहब फाल्के थे। इस फिल्म की कामयाबी ने उन्हें हिंदी सिनेमा के जनक के रूप में स्थापित किया। इस फिल्म को बनाने में 15 हजार रुपये लगे थे।

वाशिंगटन डीसी को मिला शहर का दर्जा

1802 में आज ही अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन डीसी को शहर का दर्जा मिला था। अमेरिका के पहले राष्ट्रपति जार्ज वाशिंगटन के नाम पर इस शहर का नाम रखा गया है। यहां वाशिंगटन के नाम से जुड़े डीसी का मतलब होता है डिस्ट्रिक्ट ऑफ कोलंबिया।

विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस मनाने की शुरुआत हुई

यूनेस्को की जनरल कॉन्फ्रेंस के सुझाव के बाद संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 1993 में विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस मनाने घोषणा की थी। जिसके बाद से हर साल 3 मई को यह दिवस मनाया जाने लगा। प्रेस की आजादी और समाचारों को लोगों तक पहुंचाकर उन्हें सशक्त कर रहे मीडियाकर्मियों का व्यापक विकास करना इसका मुख्य उद्देश्य है। 1997 से हर साल इस दिन यूनेस्को द्वारा गिलेरमो कानो वर्ल्ड प्रेस फ्रीडम प्राइज भी दिया जाता है। यह पुरस्कार उस व्यक्ति अथवा संस्थान को दिया जाता है, जिसने प्रेस की स्वतंत्रता के लिए उल्लेखनीय कार्य किया हो।

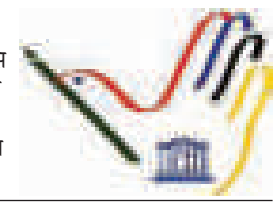

इधर उधर की

पर्यावरण संरक्षण, प्लास्टिक की बोतलों से बनाए जाएंगे गाउन

वाशिंगटन,एजेंसी : दुनिया भर में प्लास्टिक एक बड़ी समस्या के रूप में उभरी है। ऐसे में लोगों में रिसाइकिलिंग के प्रति जागरूकता लाने के लिए ऐसी चीजों के इस्तेमाल के लिए प्रेरित किया जा रहा। इसी क्रम में अटलांटा पब्लिक स्कूल के अगले सत्र में पासआउट होने वाले 2400 विद्यार्थी ग्रेजुएशन सेरेमनी में रिसाइकिल प्लास्टिक से बनी कैप और गाउन पहनेंगे। शीतलपेय बनाने वाली एक कंपनी अटलांटा और आसपास के शहरों से अभियान चलाकर प्लास्टिक की बोतलें जमा कर रही है, ताकि बच्चों के कैप और गाउन बनाने के लिए पर्याप्त संख्या में बोतलें जमा हो जाएं। बोतलों को रसाइकिलिंग प्लांट में ले जाया जाएगा। वहां, पर इनको सफाई के बाद पैलेट्स में बदला जाएगा। इसके बाद इनसे पॉलिस्टर यार्न और कपड़ा बनाया जाएगा। जिसके गाउन बनाए जाएंगे।

शोध अनुसंधान

अकेले रहने से दिमागी बीमारियों का खतरा ज्यादा

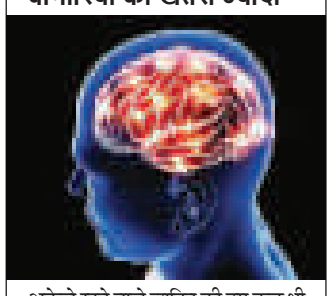

अकेले रहने वाले व्यक्ति की उम्र कुछ भी हो, उसमें दिमागी बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। ताजा शोध में यह बात सामने आई है। फ्रांस की यूनिवर्सिटी ऑफ वर्सेलेस सेंट क्वेंटिन-एन-वेलिंस के शोधकर्ताओं ने बताया कि शादी न करने की बढ़ती चाहत, घटती प्रजनन क्षमता और बढ़ते बुढ़ापे के कारण अकेले रहने वालों की संख्या बढ़ रही है। अकेलेपन और दिमागी समस्याओं के बीच संबंध को लेकर पहले हुए अध्ययन बड़ी उम्र के लोगों पर ही केंद्रित रहे हैं। युवाओं पर इसके असर को लेकर शोध नहीं किए गए। नए अध्ययन में 16 से 64 साल की उम्र के 20,500 लोगों को शामिल किया गया। शोधकर्ता लुईस जैकब ने कहा, 'इंग्लैंड में आमतौर पर लोगों को होने वाली दिमागी परेशानी का संबंध अकेलेपन से पाया गया है।' अकेलेपन का असर हर उम्र की महिला और पुरुष पर पड़ता है। - प्रेट्र

दिल को स्वस्थ रखता है रोजाना अखरोट का सेवन

रोजाना अखरोट का सेवन दिल की सेहत के लिए फायदेमंद है। अमेरिका की पेंसिल्वेनिया स्टेट यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने बताया कि जो लोग कम सैचुरेटेड फैट का इस्तेमाल करते हैं और रोजाना अखरोट का सेवन करते हैं, उनका सेंट्रल ब्लड प्रेशर कम रहता है। दिल जैसे अहम अंगों पर पड़ने वाले खून के दबाव को सेंट्रल ब्लड प्रेशर कहा जाता है। इस दबाव से पता चलता है कि व्यक्ति में दिल की बीमारियों का खतरा कितना है।शोधार्थी एलिसा टिंडल ने कहा, 'अखरोट में अल्फा लिनोलेनिक एसिड (एएलए) होता है। यह ओमेगा-3 फैट है, जिससे ब्लड प्रेशर पर सकारात्मक असर पड़ता है।' हालांकि वैज्ञानिक अभी यह नहीं जान पाए हैं कि सेंट्रल ब्लड प्रेशर पर एएलए से असर पड़ता है या अखरोट में मिलने वाले पॉलीफिनोल जैसे अन्य तत्वों से। - प्रेट्र

अहम घटना ▶ 21 जनवरी को पूर्ण चंद्रग्रहण के दौरान हुई थी तेज टक्कर

चट्टान के टकराने से चांद पर हो गया गड्ढा

वैज्ञानिकों ने पहली बार रिकॉर्ड की ऐसी टक्कर से पैदा हुई चमक

लंदन, प्रेट्र : इस साल 21 जनवरी को जब धरती पर लोग पूर्ण चंद्रग्रहण देख रहे थे, ठीक उसी वक्त चांद से एक आकाशीय चट्टान टकराई थी। टकराते समय इसकी गति 61,000 किलोमीटर प्रति घंटा थी। इसके टकराने से चांद की सतह पर 10 से 15 मीटर चौड़ा गड्ढा हो गया। चंद्रग्रहण पर नजर रख रहे वैज्ञानिकों ने उस टक्कर के समय वहां हल्की सी चमक देखी थी।

जब सूर्य, चंद्र और पृथ्वी तीनों एक सीध में आ जाते हैं तब पूर्ण चंद्रग्रहण होता है। इस दौरान चांद पूरी तरह से धरती की परछाई से ढक जाता है। इस स्थिति में धरती के वातावरण से परावर्तित होने वाली किरणों के कारण चांद का रंग लाल हो जाता है। इस साल 21 जनवरी को पूर्ण चंद्रग्रहण हुआ था। इस दौरान कई वैज्ञानिकों ने इस पर निगाह रखी थी। स्पेन की यूनिवर्सिटी ऑफ हुएल्वा और इंस्टीट्यूट ऑफ एस्ट्रोफिजिक्स के शोधकर्ताओं ने चंद्रग्रहण को देखने के लिए आठ टेलीस्कोप का इस्तेमाल किया था। उस दौरान चट्टान के टकराने से पैदा हुई चमक करीब 0.28 सेकेंड तक रही थी। कई कोशिशों के बाद पहली बार चंद्रग्रहण के दौरान इस तरह की चमक को रिकॉर्ड किया जा सका है।

वैज्ञानिक जोस मारिया मेडिडो ने कहा, 'धरती पर किसी प्रयोगशाला में इन परिस्थितियों को पैदा करना संभव नहीं है। ऐसे में इस तरह की घटनाएं खगोलीय रूप से महत्वपूर्ण होती हैं। इससे यह अनुमान लगाना संभव हो सकता है कि उल्का पिंड के टकराने से चांद पर क्या प्रभाव पड़ता है।'

बहुत तेज थी टक्कर की गति : धरती से इतर चांद पर कोई वातावरण नहीं है, जो उसकी हिफाजत कर सके। इस कारण से छोटी सी चट्टान या टुकड़े भी उससे टकरा जाते हैं। यह टक्कर बहुत तेजी से होती है इसलिए प्रायः वह चट्टान टकराते ही वाष्पित हो जाती है और वहां कुछ मलबा बचता है। इस प्रक्रिया में हल्की सी चमक पैदा होती है। इसे धरती से देखा जा सकता है। वैज्ञानिकों का कहना है कि चंद्रग्रहण के दिन जो चट्टान टकराई थी, उसका द्रव्यमान 45 किलोग्राम था। इसका आकार चारों ओर से करीब 30 से 60 सेंटीमीटर था। यह टक्कर चांद के दक्षिण-पश्चिम हिस्से में उपस्थित विशाल गड्ढे (क्रेटर) लेगरेंज एच के नजदीक है। इस टक्कर से पैदा हुई ऊर्जा करीब 1.5 टन टीएनटी के बराबर थी। यह ऊर्जा 15 मीटर का गड्ढा बनाने के लिए पर्याप्त है।

पहले उल्का टकराने का लगाया था अनुमान

21 जनवरी को जैसे ही पूर्ण चंद्रग्रहण शुरू हुआ, चांद की सतह पर हल्की सी चमक दिखी। यह चमक ऐसी थी जिसे सामान्य आंखों से भी देखा जा सकता था। उस समय वैज्ञानिकों ने माना था कि यह चमक किसी उल्का पिंड के टकराने से पैदा हुई होगी।

चंद्रयान-2 को जुलाई में लांच करने की योजना

चेन्नई, आइएएनएस : चांद पर भारत के दूसरे अभियान 'चंद्रयान-2' को जुलाई में लांच किए जाने की संभावना है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने यह जानकारी दी है। बयान के मुताबिक, चंद्रयान-2 के सभी मॉड्यूल्स को नौ जुलाई, 2019 से 16 जुलाई, 2019 के बीच लांच करने के लिए तैयार किया जा रहा है। चंद्रयान-2 के चंद्रमा की सतह पर सात सितंबर को उतरने की संभावना है। चंद्रयान-2 में तीन मॉड्यूल हैं जिनके नाम हैं-ऑर्बिटर, लैंडर (विक्रम) और रोवर (प्रज्ञान)। बता दें कि 2008 में भारत ने चांद पर अपना पहला मिशन चंद्रयान-1 छोड़ा था, लेकिन तब क्रैश लैंडिंग कराई थी, जिसे हार्ड लैंडिंग भी कहा जाता है। इसरो का कहना है कि क्रैश लैंडिंग की वजह से एमआइपी कई टुकड़ों में टूट गया था। अभी तक चांद पर अमेरिका, रूस और चीन ही सॉफ्ट लैंडिंग करा पाए हैं।

एस्टेरॉयड इटोकावा के नमूनों में मिला पानी

▶ अमेरिका की एरिजोना स्टेट यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने लगाया पता

वाशिंगटन, प्रेट्र : भारतवंशी समेत वैज्ञानिकों के एक दल को इटोकावा एस्टेरॉयड (क्षुद्रग्रह) की सतह से लाए गए नमूनों में पानी मिला है। जापानी अंतरिक्षयान हायाबुसा ने इस क्षुद्रग्रह की सतह से नमूने एकत्र किए थे।

अमेरिका की एरिजोना स्टेट यूनिवर्सिटी (एएसयू) के शोधकर्ताओं के अनुसार, इटोकावा के नमूनों में पहली बार पानी पाए जाने से यह जाहिर होता है कि प्रारंभिक दौर में हमारी धरती पर इसी तरह के क्षुद्रग्रहों का असर पड़ा हो सकता है। समुद्रों का आधा पानी इन्हीं से हमारी धरती पर आया हो सकता है। एएसयू के स्कूल ऑफ अर्थ एंड स्पेस एक्सप्लोरेशन के शोधकर्ता जिलिंग जिन ने कहा, 'हमने परीक्षण में नमूनों को पानी से संपन्न पाया।' एएसयू की असिस्टेंट प्रोफेसर मैत्रेयी बोस ने कहा, 'हमसे पहले किसी ने भी एस्टेरॉयड पर पानी की खोज नहीं की। इस बात की खुशी है कि हमें यह सफलता मिली।'

धूल कणों में मिला पानी : इटोकावा की सतह से लाए गए धूल के कणों में पानी पाया गया है। वैज्ञानिकों ने पांच कणों में से दो में पाइरॉक्सीन नामक खनिज की पहचान की है। वहां के स्थलीय नमूनों में पाइरॉक्सीन की क्रिस्टल संरचना में पानी पाया गया।

इस कारण खत्म हो गया पानी : शोधकर्ताओं का कहना है कि इटोकावा का इतिहास ऐसा रहा है जिसमें उसे कई विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। उसे गर्मी, कई तरह के प्रभावों, झटकों और विखंडन से गुजरना पड़ा। इनके चलते खनिजों का तापमान बढ़ने और उनमें पानी खत्म होने का अनुमान है। शोधकर्ताओं का यह भी मानना है कि वैसे इटोकावा जैसे क्षुद्रग्रह सूखे होते हैं, लेकिन इस तरह के क्षुद्रग्रहों पर वैज्ञानिकों के अनुमान से कहीं ज्यादा पानी हो सकता है। स्पष्ट है कि इस शोध के बाद क्षुद्रग्रह को लेकर वैज्ञानिकों की दिलचस्पी और बढ़ेगी।

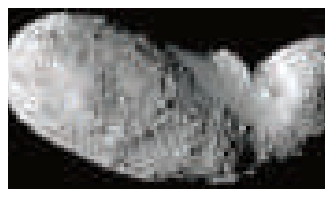

मूंगफली के आकार का है क्षुद्रग्रह : इटोकावा क्षुद्रग्रह का आकार मूंगफली जैसा है। यह करीब 1800 फीट लंबा और एक हजार फीट चौड़ा है। इसे सूर्य की एक परिक्रमा करने में 18 महीने का समय लगता है।

जापानी यान ने एकत्र किए थे 1500 कण : जापान की अंतरिक्ष एजेंसी ने साल 2003 में इटोकावा के लिए हायाबुसा अंतरिक्षयान रवाना किया था। इसका मिशन 2010 में खत्म हो गया। इस यान ने 2005 में इटोकावा की सतह से 1500 से ज्यादा धूल के कण एकत्र किए थे।

त्वचा कोशिकाओं से बनाया भ्रूण का स्टेम सेल

येरुशलम, प्रेट्र: वैज्ञानिकों ने त्वचा कोशिकाओं को बदलकर भ्रूण का स्टेम सेल बनाने का एक नया तरीका खोजा है। 'सेल स्टेम सेल' जर्नल में प्रकाशित हुए अध्ययन में यह दावा किया गया है कि त्वचा कोशिकाओं से भ्रूण संबंधी विकारों को ठीक करने का एक नया तरीका मिल गया है। येरुशलम की हिब्रू यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने बताया कि जीन में इतनी क्षमता होती है कि वह म्यूरिन त्वचा को अन्य तीन प्रमुख सेल में बदल सकता है। शोधकर्ताओं ने कहा 'अब भविष्य में यह भी संभव है कि अंडों के बिना भी त्वचा की कोशिकाओं से वैज्ञानिक पूरा भ्रूण बनाने में सफल हो जाएं।' उन्होंने दावा किया है कि इस अध्ययन में भ्रूण संबंधी दोषों के व्यापक प्रभाव बारे में प्रकाश डाला गया है। इसके साथ ही इस तरीके से बांझपन समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। वैज्ञानिकों का कहना है कि इसके जरिये चिकित्सा के क्षेत्र में नई राह खुलेगी।

फिल्म रिव्यू

सेटर्स

निर्देशक : अश्विनी चौधरी
प्रमुख कलाकार : श्रेयस तलपड़े, आफताब शिवदासानी, विजय राज, इशिता दत्ता, सोनाली सहगल, पवन मल्होत्रा
अवधि : दो घंटे पांच मिनट

शिक्षा माफिया की कारगुजारियां

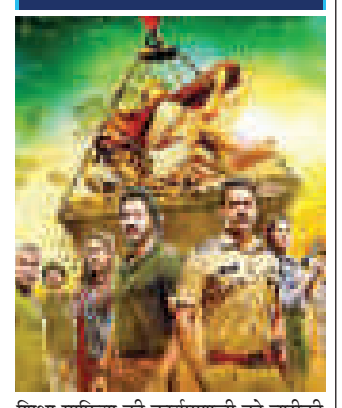

सरकारी नौकरियों, मेडिकल व इंजीनियरिंग कॉलेजों में अपने बच्चों को प्रवेश दिलाने का सपना पाले माता-पिता उन्हें पूरा करने के लिए लाखों रुपये खर्च करने से परहेज नहीं करते। शिक्षा माफिया उनकी इन हसरतों को पूरा करने के लिए पेपर लीक करने, प्रॉक्सी (अभ्यर्थी की जगह किसी और से परीक्षा दिलवाना) तथा नकल कराने के विकल्प देते हैं। पैसे के बल पर अयोग्य अभ्यर्थियों का भविष्य बन जाता है, लेकिन प्रतिभाशाली छात्र पिछड़ जाते है। शिक्षा माफिया की कार्यप्रणाली, सरकारी तंत्र और कोचिंग संचालकों की मिलीभगत व आधुनिक तकनीक के उपयोग के चलते यह व्यापार किस तरह फल-फूल रहा है, इसी पर आधारित है 'सेटर्स'।

कहानी का आरंभ रेलवे भर्ती के लिए होने वाली परीक्षा के पेपर आउट कराने से होता है। अपूर्व चौधरी (श्रेयस तलपड़े) अपने सहयोगियों की मदद से पेपर लीक कराने में कामयाब हो जाता है। वह बनारस के शिक्षा माफिया भैयाजी (पवन राज मल्होत्रा) के लिए काम करता है। भैयाजी को राजनेताओं का भी सरंक्षण प्राप्त है। वे लोग रेलवे के बाद बैंकिंग की परीक्षा का पेपर लीक कराने की तैयारी करते हैं। पुलिस उनका पर्दाफाश करने की कोशिशों में जुटती है। एसआईटी प्रमुख आदित्य सिंह (आफताब शिवदासानी) के नेतृत्व में टीम का गठन किया जाता है। यह बात सामने आती है कि अपूर्व सिविल सेवा की परीक्षा में अनुत्तीर्ण होता है। आदित्य की पत्नी और अपूर्व अच्छे दोस्त हैं। हालांकि उनकी दोस्ती से अपूर्व के इस गोरखधंधे में आने का कारण स्पष्ट नहीं होता है। बहरहाल, अपूर्व अपनी टीम के साथ पुलिस के साथ आंख-मिचौली का खेल खेलता है।

'लाडो' फिल्म के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित अश्विनी चौधरी की यह फिल्म शिक्षा माफिया की कार्यप्रणाली को बारीकी से दिखाती है। उन्होंने पेपर लीक कराने के तौर-तरीकों से लेकर परीक्षा पास कराने के हथकंडों को दिखाया है, जो हतप्रभ करता है। शिक्षा माफिया के सामने पुलिस विभाग काफी असहाय नजर आता है। फिल्म में अपूर्व और प्रेरणा (इशिता दत्ता) का प्रेम-प्रसंग आदि कुछ प्रसंग समुचित तरीके से नहीं गढ़े गए। सिराज अहमद द्वारा लिखे गए स्क्रीनप्ले और डायलॉग में शिक्षा माफिया द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली शब्दावली में कुछ नयापन नहीं दिखता। लोगों के पहनावे से उन्हें जज करने वाले एक सीन में विजय राज का किरदार कहता है- 'लुंगी पहनने वाला बिजनेस क्लास में नहीं चल सकता, ऐसा कोई कानून है?' इस तरह के दृश्य रोचक हैं, जो दर्शकों को प्रभावित करते हैं।

श्रेयस तलपड़े के किरदार का शुरुआत में लहजा अलग था, बाद में वह सामान्य हिंदी बोलने लगता है। हालांकि श्रेयस अपनी भूमिका साथ न्याय करते दिखे हैं। इस लिहाज से कहा जा सकता है कि उन्होंने वे उम्मीदें पूरी की हैं जो उनसे इस फिल्म में लगाई गई थीं। इसी तरह आफताब शिवदासानी पुलिस अधिकारी की वर्दी में काफी जंचते हैं, लेकिन फिल्म का खास आकर्षण विजय राज हैं। खास बात यह है कि वह अपनी अदायगी से किसी भी किरदार को रोचक बना देते हैं। हालांकि उनके किरदार के बारे में काफी कुछ जानने की जिज्ञासा अधूरी रह जाती है। भैयाजी बने पवन राज मल्होत्रा अपने किरदार में जंचते हैं। अभिनेत्री सोनाली सहगल के हिस्से में कुछ खास नहीं आया है। बनारस की खूबसूरती को जरूर कैमरे में बखूबी कैद किया गया है। इस लिहाज से कुछ दृश्य काफी अच्छे बन पड़े हैं।

स्मिता श्रीवास्तव

★★★★★ उत्कृष्ट ★★★★ बहुत अच्छी ★★★ अच्छी ★★ औसत ★ औसत से कम

ट्रेन में अनोखा फैशन शो

इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता में गुरुवार को एयरपोर्ट एक्सप्रेस ट्रेन में मुस्लिम फैशन शो के दौरान मॉडल। यह फैशन शो आगामी रमजान माह की खुशी में आयोजित किया गया। रमजान छह मई से शुरू हो रहा है। इसको लेकर खासा उल्लास है। एपी

स्क्रीन शॉट

प्यार करने की कोई उम्र नहीं होती : आहाना

सात सवाल

अभिनेत्री आहाना कुमरा 'लिपस्टिक अंडर माइ बुर्का', 'एक्सीडेंटल प्राइम मिनिस्टर' जैसी फिल्में और 'इनसाइड एज', 'रंगबाज' जैसी वेब सीरीज का हिस्सा रह चुकी हैं। उनकी फिल्म 'योर्स ट्रूली' जी5 पर 3 मई को रिलीज हो रही है। उनसे बातचीत :

इन दिनों फिल्मों से लेकर वेबसीरीज तक आपके काम में काफी विविधता देखी जा रही है... ?

- फिल्मों के विषयों के मामले में मैं भाग्यशाली रही हूं। फिल्में हों या नाटक, मैंने ईमानदारी से काम किया है। टीवी से मैंने दूरी बनाई है, क्योंकि वहां मैं अपनी तरह का काम नहीं कर सकती हूं। मैं आराम से रिहर्सल के साथ काम करना पसंद करती हूं। टीवी में ऐसा संभव नहीं है। मैं चाहती हूं कि लोग मेरी खूबसूरती के लिए नहीं, बल्कि काम के लिए याद रखें। खूबसूरत होना एक अतिरिक्त गुण हो सकता है। किरदार छोटा ही सही, लेकिन उसमें करने के लिए कुछ होना चाहिए।

'योर्स ट्रूली' फिल्म कैसे मिली ?

- मैं कोलकाता में कई नाटक कर चुकी हूं। मेरा 'सर सर सरला' नाम का नाटक निर्देशक संजय नाग ने देखा था। उन्हें मेरा अभिनय पसंद आया था। उन्होंने तभी मुझे इस फिल्म में कास्ट करने के बारे में सोच लिया था।

कोलकाता में शूटिंग करने का अनुभव कैसा रहा ?

- शूटिंग के पहले दिन संजय दादा ने कहा कि लोकेशन देखने चलते हैं, जो तीस किलोमीटर दूर थी। उन्होंने पूछा- ट्रेन से चलोगी या कार से? मैंने कहा- हम ट्रेन से चलेंगे। हमने हावड़ा से ट्रेन पकड़ी। इससे पहले मैंने कभी हावड़ा से ट्रेन नहीं ली थी। बहुत ही अद्भुत अनुभव था। जब हम लोकेशन पर पहुंचे तो उन्होंने बताया कि हम इस घर में शूटिंग करने वाले हैं और यह घर साढ़े तीन सौ साल पुराना है। मैं सुनकर चौंक गई थी।

फिल्म में सोनी राजदान आपकी बड़ी बहन के किरदार में हैं। सेट पर उनके साथ किस तरह का तालमेल रहा ?

- सोनी मैम से मिलकर कभी ऐसा नहीं लगा ही नहीं कि उनसे पहली बार मिल रही हूं। उन्होंने बिल्कुल मेरी बहन की तरह ही बर्ताव किया। शूटिंग के बाद हम साथ में बैठकर खाना खाते थे। वह बहुत अच्छी सलाह देती हैं। हम दोनों थियेटर से हैं, तो थियेटर की बहुत-सी बातें होती थीं।

फिल्म की कहानी एक अकेली महिला की है, जिसे रिटायरमेंट की उम्र में एक आवाज से प्यार हो जाता है। क्या डिजिटल के जमाने में ऐसा प्यार संभव है ?

- हां, ऐसा प्यार हो सकता है। जब मैं बुसान इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल गई थी, तब एहसास हुआ कि एशियन देशों में कई महिलाएं अकेली रहती हैं। वे तब तक शादी नहीं करती हैं, जब तक उन्हें अपने लिए सही लड़का न मिल जाए। हमारे समाज में कई लड़कियां सामाजिक दबाव में शादी कर लेती हैं। अकेलेपन में रहना और यह यकीन करना कि मेरे लिए भी कोई बना है, जिसका मैं इंतजार करूंगी, ऐसा उनके लिए संभव है, जो इस फिल्म में भी दिखाया गया है।

प्यार को लेकर आपकी सोच क्या है ? क्या प्यार किसी भी उम्र में हो सकता है ?

-हां, मुझे लगता है प्यार करने की कोई उम्र नहीं होती है, न ही उसका कोई एक रूप हो सकता है। मेरे नाटक 'सर सर सरला' ने मुझे प्यार की परिभाषा सिखाई है। प्यार अपना रूप निरंतर बदलता रहता है। मुझे परिवार से प्यार है, अपने भतीजे से प्यार है। मुझे याद है, जब वह पैदा हुआ था, तो मुझे लगा कि इससे प्यारी चीज कोई हो ही नहीं सकती। प्यार को लेकर सख्त नहीं हूं। अगर आपके लिए कोई बना है, तो वह मिलेगा।

शादी का दबाव आप पर भी होगा ?

- मम्मी तो नहीं, लेकिन पापा कहते रहते हैं कि शादी कर लो। केवल एक हफ्ते का समय दे दो, उसमें शादी हो जाएगी। फिलहाल मैं बहुत व्यस्त हूं। शादी के लिए वक्त भी नहीं है।

प्रियंका सिंह

बड़ी बात

दूषित जल एक बड़ी समस्या है। सबसे बड़ी चिंता यह है कि क्या इसे दोबारा प्रयोग में लाया जा सकता है। इस दिशा में प्रिसंटन विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने एक राह दिखाई है...

गंदे पानी से हाइड्रोजन अलग कर बनेगा स्वच्छ ईंधन

▶ सूर्य के किरणों का इस्तेमाल कर ईजाद की नई और सस्ती तकनीक

▶ 'एनर्जी एंड इंवायरमेंटल साइंस' जर्नल में प्रकाशित अध्ययन में वैज्ञानिकों ने किया दावा

वाशिंगटन, प्रेट्र : सूर्य के प्रकाश का इस्तेमाल करते हुए वैज्ञानिकों ने आद्यौगिक इकाइयों से निकलने वाले अपशिष्ट जल से हाइड्रोजन को अलग कर ईंधन बनाने के लिए स्वच्छ और सस्ता मार्ग प्रशस्त किया है। प्लास्टिक से लेकर हजारों उत्पादों के निर्माण में हाइड्रोजन एक महत्वपूर्ण घटक की भूमिका निभाता है, लेकिन शुद्ध हाइड्रोजन का उत्पादन काफी महंगा है और इसके लिए ऊर्जा की खपत भी ज्यादा होती है।

'एनर्जी एंड एनवायरमेंटल साइंस' जर्नल में प्रकाशित अध्ययन में अमेरिका की प्रिंसटन यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने दावा किया है कि इस प्रक्रिया के जरिये उन्होंने अपशिष्ट जल से वर्तमान तरीकों के मुकाबले दोगुना हाइड्रोजन का उत्पादन किया। खास तौर से डिजाइन किए गए एक चैंबर में काले सिलिकॉन इंटरफेस के साथ इस तकनीक का प्रयोग कर अपशिष्ट से पानी और हाइड्रोजन गैस को पृथक किया गया। इस प्रक्रिया में बैक्टीरिया के द्वारा अपशिष्ट जल में मौजूद कार्बनिक पदार्थों को जब नष्ट किया जाता है तो उसमें विद्युत प्रवाह (करंट) पैदा होता है। यह पानी से हाइड्रोजन को पृथक करने में मदद करता है।

इस अध्ययन के लिए प्रिंसटन यूनिवर्सिटी के जिह्योंन जेसन रेन के नेतृत्व में एक टीम ने शराब की भट्टी से निकले अपशिष्ट जल का परीक्षण किया। इसके लिए उन्होंने चैंबर में सूर्य के प्रकाश में पानी को बहाया तो उन्होंने देखा कि कार्बनिक पदार्थ उससे अलग हो गए हैं और हाइड्रोजन के बुलबुले उठने लगे। अमेरिका की सैन डिएगो स्टेट यूनिवर्सिटी के असिटेंट प्रोफेसर जिंग गू ने कहा 'यह प्रक्रिया हमें अपशिष्ट जल को ट्रीट करने के साथ ही ईंधन उत्पादन में सहायता करेगी। जाहिर है कि इसके जरिये हम एक साथ दो लक्ष्य हासिल कर सकते हैं।'

शोधकर्ताओं ने कहा 'इस तकनीक का प्रयोग हम रिफाइनरी और केमिकल प्लांट में कर सकते हैं, जो आमतौर पर जीवाश्म ईंधन से हाइड्रोजन पैदा करते हैं और इस प्रक्रिया में उनकी लागत भी ज्यादा आती है।' बता दें कि हाइड्रोजन का उत्पादन तेल, गैस और कोयले पर निर्भर करता है और एनर्जी-इंटेंसिव विधि के जरिये भाप से हाइड्रोकार्बन स्टॉक का प्रसंस्करण किया जाता है।

केमिकल बनाने वाली कंपनियां उच्च-स्तरीय रसायन जैसे मीथेनॉल और अमोनिया बनाने के लिए हाइड्रोजन गैस को कार्बन और नाइट्रोजन के साथ मिलाती हैं। इससे सिंथेटिक फाइबर, उर्वरक, प्लास्टिक और सफाई उत्पाद समेत कई सामान बनाए जाते हैं। हालांकि हाइड्रोजन का इस्तेमाल वाहनों के ईंधन के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है। केमिकल इंडस्ट्री आज सबसे ज्यादा हाइड्रोजन का इस्तेमाल और उत्पादन करने वाली इंडस्ट्री है।

आयुष्मान करेंगे सीता, द्रौपदी और राधा के किरदार

बॉलीवुड में फिल्म 'ड्रीम गर्ल' का नाम लेने पर धर्मेंद्र और हेमामालिनी की फिल्म की याद आ जाती है। अब इसी नाम से एक बार फिर एक और फिल्म बन रही है, जिसमें आयुष्मान खुराना मुख्य भूमिका में हैं। दिलचस्प यह है कि इस कॉमेडी फिल्म में आयुष्मान खुराना सीता, द्रौपदी और राधा के किरदार निभाएंगे। फिल्म की प्रोड्यूसर एकता कपूर हैं और यह इसी साल सितंबर में रिलीज होगी। फिल्म के निर्देशक राज शांडिल्य हैं, जिन्होंने इससे पहले कई फिल्मों के लिए लेखन किया है। राज ने 2007 से 2014 तक टेलीविजन शो 'कॉमेडी सर्कस' के लिए स्क्रिप्ट लिखी थी। इसके अलावा 2015 में फिल्म 'वेलकम बैक' और 2016 में 'फ्रीकी अली' के लिए संवाद लिखे तथा 2017 में आई थ्रिलर फिल्म 'भूमि' के लिए पटकथा भी लिखी। साथ ही 2018 में आई सनी देयोल और प्रीति जिंटा की फिल्म 'भैयाजी सुपरहिट' के संवाद भी राज ने ही लिखे थे। बहरहाल, राज अभी 'ड्रीम गर्ल' के निर्देशक हैं और कहते हैं, 'मैं इस फिल्म के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं दूंगा, लेकिन इसका शीर्षक अपने आप में बहुत कुछ कहता है। हां, इसमें आयुष्मान को आप रामायण की सीता, महाभारत की द्रौपदी तथा कृष्ण लीला की राधा के रूप में देख पाएंगे। वह इन महिला पात्रों के रूप में क्यों और कैसे नजर आएंगे, यह अभी नहीं बताऊंगा।' राज के अनुसार, फिल्म की शूटिंग मथुरा में होगी और आयुष्मान हरियाणवी तथा हिंदी में संवाद अदा करते नजर आएंगे। खुद राज 'अंधाधुन' के इस कलाकार के प्रशंसक हैं। वह कहते हैं, आयुष्मान बेहतरीन कलाकार हैं। उनमें न तो ईर्ष्या है और न घमंड। वह अपनी हर फिल्म में ऐसे काम करते हैं, जैसे वह उनकी पहली फिल्म हो। उसके साथ फिल्म करने का मतलब है, अपने कॅरियर की सबसे अच्छी फिल्म करना।